

SUMMARY TRIAL UNDER SECTION 263 OR 264 OF THE CRIMINAL CODE, 1898 PROCEDUR

In the court of.

जेएमएफसी गोहद

प्रकरण कमांक 72/2018

Name and address of the complain म०प्र० शासन द्वारा पुलिस थाना गोहद भण्ड म०प्र०

name, parentage, caste and address of accused-

1. And Sho mois Pric 01415

The offence complained of, and date of its alleged commission

The offence complained of, and date of its alleged commission

The offence complained of, and date of its alleged commission

The offence complained of, and date of its alleged commission

The offence complained of, and date of its alleged commission

The offence complained of, and date of its alleged commission

The offence complained of, and date of its alleged commission

The offence complained of, and date of its alleged commission

The offence complained of, and date of its alleged commission

The offence complained of, and date of its alleged commission

The offence complained of, and date of its alleged commission

The offence complained of, and date of its alleged commission

The offence complained of, and date of its alleged commission

The offence complained of, and date of its alleged commission

The offence complained of the offence commission of the offence commission of the offence commission of the offence commission of the offence complained of the offence commission of the offence complained of the offence complain

The plea of the accused and bis examination [if any]--

आरोपी का अभिवाक-

STUCIES CAPTICES

The offence proved, if any in, case under clause (d), clause (e), clause (f) or clause (g), of sub-section (1) of section 260, the value of the property in respect of whitch the offence has been committed.

न्यायिक मी हिन्द न्यायिक मी हिन्द न्यायिक मी हिन्द जिला निभण्ड

//निर्णय//

(आज दिनांक 14-5-10) को पारित किया गया)

1. अभियुक्त को आबकारी अधिनियम की धारा 185 के अपराध की विशिष्टियां पढकर सुनायी एवं समझायी जाने पर उसने अपराध करना स्वेच्छा पूर्वक स्वीकार किया है आरोपी की स्वेच्छा स्वीकारोक्ति पर अविश्वास किये जाने का कोई कारण प्रतीत नहीं होता है अतः उक्त स्वेच्छा स्वीकारोक्ति के आधार पर आरोपी को धारा 105 m.v. १०६० के अंतर्गत दोषसिद्धि उहराया जाता है।

- अभियुक्त के प्रथम अपराध होने एंव प्रकरण के तथ्य व परिस्थितयों को देखते हुए उसे न्यायालय उठने तक की सजा एवं अर्थदण्ड अधिरूपित करने से ही न्याय के उददेश्यों से ही पूर्ति हो सकती हैं।
- 3. फलस्वरूप आरोपी को धारा 185 m v कि के अंतर्गत न्यायालय उठने तक की सजा एवं 🙎 🗸 🗢 🏷 रूपये के अर्थदंड तथा अर्थदंड की राशि में व्यतिक्रम होने पर 🔰 दिवस के साधारण कारावास के दंड से दंडित किया जाता
- 4. प्रकरण में मुददे माल अह स्टी टी की ओर भेजी जावे
- आरोपी स्वतंत्र हो।

स्थान-गोहद

दिनांक- 14-5-19

निर्णय आज दिनांकित एवं मेरे निर्देशानुसार टंकित किया गया हस्ताक्षरित कर घोषित किया गया

न्यायिक मजिस्ट्रेट १थम श्रेणी गोहद, जिला-भिण्ड